13-05-2022

भारत अब दुनिया के देशों को चीनी उत्पादन की बारीकियां सिखा रहा

एनएसआई में आजादी के अमृत महोत्सव में भारतीय चीनी उद्योग के सफर पर डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई

प्रेरणा

कानपुर। आजादी के अमृत महोत्सव के तत्वाधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवसम्न मनाया गया। इस अवसर पर भारतीय चीनी उद्योग का सफर में विगत 100 वर्षों के प्रगतिशील इतिहास को एक डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से प्रदर्शित किया गया जिसमे इन वर्षों के दौरान इस उद्योग मे हुये तकनीकी प्रगति को दर्शाते हुये दिखाय गया कि किस प्रकार आज, भारत का यह उद्योग विभिन्न चीनी उत्पादक राष्ट्रों मे एक तकनीकी रूप से इस उद्योग के रूप मे खड़ा हुआ है जो आज चीनी उत्पादन के मामले मे विश्व में दूसरे पायदान पर है।

पहले 10 लाख अब 300 लाख मीट्रिक टन चीनी का उत्पादन हो रहा

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निदेशक नरेंद्र मोहन ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि देश के आजादी के दौरान जहाँ भारत मे मात्र 10 लाख मीट्रिक टन प्रति वर्ष की दर से चीनी का उत्पादन होता था और इसके कारण देश मे मांग की आपूर्ति हेतु आयात पर निर्भर रहना पड़ता था वहीं आज देश मे चीनी का उत्पादन 300 लाख मीट्रिक टन प्रति वर्ष से भी अधिक होता है और अब विश्व के कई देशों को चीनी का निर्यात भी किया जाता है। उन्होने कहा कि इस प्रगति मे तकनीक ने निर्विदेह खेतों से लेकर कारखाने तक की उत्पादकता बढ़ाने में सहयोग प्रदान किय है, तथापि हमे चैन की नींद लेने की आवश्यकता नहीं है अब हमें नयी तकनीकों के माध्यम से फार्म के यंत्रीकरण और डिजिटलीकरण के द्वारा गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता है। चीनी कारखानों को अब शून्य स्वच्छ जल खपत (ट्रेड्श खसड्राद्ध ड्डड्डड्डर इन्ड्डड्डाद्धद्धड्डन्ड्ड-ड्डस्ट)ज और शून्य डाउन टाइम (ड्डड्ड)ज के लक्ष्य को पाने का प्रयास करना चाहिए जिससे कारखाने की उत्पादन दक्षता के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी ध्यान मे रखा जाये।

टेक्नोलॉजी का विकास अच्छा साबित हुआ

प्रो. डी. स्वेन, शर्करा अभियांत्रिकी आचार्य ने अपने सम्बोधन मे विगत वर्षों के दौरान गन्ने के रस निकालने, स्टीम और ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र मे हुये तकनीकी विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि तकनीकी विकास का सुखद परिणाम यह रहा है कि अब चीनी कारखाने सरप्लस उत्पादित ऊर्जा को पावर ग्रिड को बेंच रहे है जिससे उन्हें अतिरिक्त आय की प्राप्ति हो रही है। डॉ. (श्रीमती) सीमा परोहा, आचार्या जैव रसायन ने पेट्रो-उत्पादों मे ईथनोल के मिश्रण के क्षेत्र मे हुये तकनीकी विकास के बारे विस्तृत जानकारी देते हुये इस उद्योग को इस क्षेत्र मे विकसित नवीनतम तकनीकों को अपनाने पर बल देते हुये कहा कि इससे लक्षित अपशिष्ट प्रबंधन के साथ-साथ अपशिष्ट को संसाधन मे परवर्तित करने मे भी सहयोग प्राप्त होगा।.

ऑटोमेटिक कंट्रोल से ह्यूमन एरर में कमी आई

वीरेंद्र कुमार, वरिष्ठ इन्स्ट्रूमेंट अभियंता ने इस दौरान चीनी उद्योग मे ऑटोमेशन (स्वत: प्रक्रिया संचालन) के ऊपर प्रस्तुति दी और बताया कि ऑटोमेटिक नियंत्रण के फलस्वरूप मानवीय भूलों मे उत्पन्न अकुशलता मे कमी आई है और बेहतर नियंत्रण और प्रक्रिया संचालन मानकों के उपयोग से उत्पादकता मे चतुर्मुखी वृद्धि हुई है।कार्यक्रम का संचालन संजय चौहान, शर्करा अभियांत्रिकी आचार्य के द्वारा किया गया।

चीनी उद्योग पर डॉक्युमेंट्री दिखायीं, नई तकनीकी पर जोर

❑ चीनी कारखानों को अब शून्य स्वच्छ जल खपत और शून्य डाउन टाइम के लक्ष्य को पाने का प्रयास करना चाहिये-निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 11 मई। आजादी के अमृत महोत्सव के तत्वावधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर के सभागार में आयोजित राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर भारतीय चीनी उद्योग का सफर में विगत 100वर्षों के प्रगति इतिहास को एक डॉक यू मेंट्री के माध्यम से प्रदर्शित किया गया, जिसमें इन वर्षों के दौरान इस उद्योग में हुए तकनीकी प्रगति को दिखाया गया। आज विभिन्न चीनी उत्पादक राष्ट्रो में एक तकनीकी रूप से इस उद्योग के रूप में खड़ा हुआ है जो आज चीनी उत्पादन के मामले में विश्व में दूसरे पायदान पर है। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहाकि देश के आजादी के दौरान भारत में मात्र 10 लाख मीट्रिक टन प्रति वर्ष की दर से चीनी का उत्पादन होता था और देश में चीनी की आपूर्ति के लिए विदेश से चीनी का आयात करना पड़ता था। वही आज देश में चीनी का उत्पादन 300 मीट्रिक टन प्रति वर्ष से अधिक है और अब विश्व के कई देशों में चीनी का निर्यात भी किया जाता है। उन्होंने कहाकि नई तकनीकी के माध्यम से फार्म के यंत्रीकरण और डिजिटलीकरण से गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता है। चीनी कारखानों को अब शून्य स्वच्छ जल खपत और शून्य डाउन टाइम के लक्ष्य को पाने का प्रयास करना चाहिये। जिससे कारखाने की उत्पादकता के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी ध्यान में रखा जाये। प्रो. डी. स्वेन ने विगत वर्षों के दौरान गन्ने के रस निकालने, स्टीम और ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में हुए तकनीकी विकास पर प्रकाश डाला। डा. सीमा परोहा ने पेट्रो-उत्पादों में ईथनाल के मिश्रण के क्षेत्र में हुए तकनीकी विकास के ब ारे में जानकारियां दी। डा. वीरेंद्र कुमा र ने इस दौरान चीनी उद्योग में आटोमेशन के बारे में जानकारियां दी। कार्यक्रम का संचालन संजय चौहान ने किया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन।

भारत चीनी उत्पादन के मामले मे विश्व में दूसरे पायदान पर

कानपुर (नगर छाया समाचार)। आजादी के अमृत महोत्सव के तत्वाधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर मे राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर भारतीय चीनी उद्योग का सफर में विगत 100 वर्षों के प्रगतिशील इतिहास को एक डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से प्रदर्शित किया गया जिसमे इन वर्षों के दौरान इस उद्योग मे हुये तकनीकी प्रगति को दर्शाते हुये दिखाया गया कि किस प्रकार आज, भारत का यह उद्योग विभिन्न चीनी उत्पादक राष्ट्रों मे एक तकनीकी रूप से इस उद्योग के रूप मे खड़ा हुआ है जो आज चीनी उत्पादन के मामले मे विश्व में दूसरे पायदान पर है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निदेशक श्री नरेंद्र मोहन ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि देश के आजादी के दौरान जहाँ भारत मे मात्र 10 लाख मीट्रिक टन प्रति वर्ष की दर से चीनी का उत्पादन होता था और इसके कारण देश मे मांग की आपूर्ति हेतु आयात पर निर्भर रहना पड़ता था वहाँ आज देश मे चीनी का उत्पादन 300 लाख मीट्रिक टन प्रति वर्ष से भी अधिक होता है और अब विश्व के कई देशों को चीनी का निर्यात भी किया जाता है। उन्होने कहा कि इस प्रगति मे तकनीक ने निसंदेह खेतों से लेकर कारखाने तक की उत्पादकता बढ़ाने मे सहयोग प्रदान किया है, तथापि हमे चैन की नींद लेने की आवश्यकतानहीं है अब हमें नयी तकनीकों के माध्यम से फार्म के यंत्रीकरण और डिजिटलीकरण के द्वारा गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता है। चीनी कारखानों को अब शून्य स्वच्छ जल खपत और शून्य डाउन टाइम के लक्ष्य को पाने का प्रयास करना चाहिए जिससे कारखाने की उत्पादन दक्षता के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी ध्यान मे रखा जाये।

प्रो. डी. स्वेन, शर्करा अभियांत्रिकी आचार्य ने अपने सम्बोधन मे विगत वर्षों के दौरान गन्ने के रस निकालने, स्टीम और ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र मे हुये तकनीकी विकास पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा कि तकनीकी विकास का सुखद परिणाम यह रहा है कि अब चीनी कारखाने सरप्लस उत्पादित ऊर्जा को पावर ग्रिड को बेंच रहे हैं जिससे उन्हे अतिरिक्त आय की प्राप्ति हो रही है। डॉ. (श्रीमती) सीमा परोहा,आचार्या जैव रसायन ने पेट्रो-उत्पादों मे इंथनोल के मिश्रण के क्षेत्र मे हुये तकनीकी विकास के बारे विस्तृत जानकारी देते हुये इस उद्योग को इस क्षेत्र मे विकसित नवीनतम तकनीकों को अपनाने पर बल देते हुये कहा कि इससे लक्षित अपशिष्ट प्रबंधन के साथ-साथ अपशिष्ट को संसाधन मे परवर्तित करने मे भी सहयोग प्राप्त होगा। वीरेंद्र कुमार, वरिष्ठ इन्सट्रूमेंट अभियंता ने इस दौरान चीनी उद्योग मे ऑटोमेशन (स्वतः प्रक्रिया संचालन) के ऊपर प्रस्तुति दी और बताया कि ऑटोमेटिक नियंत्रण के फलस्वरूप मानवीय भूलों से उत्पन्न अकुशलता मे कमी आई है और बेहतर नियंत्रण और प्रक्रिया संचालन मानकों के उपयोग से उत्पादकता मे चतुर्मुखी वृद्धि हुई है। कार्यक्रम का संचालन श्री संजय चौहान, शर्करा अभियांत्रिकी आचार्य के द्वारा किया गया।

आजादी के अमृत महोत्सव के तत्वाधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में राष्ट्रीय प्रौद्योगि की दिवस मनाया गया

समय ब्यूज समाचार सेवा

कानपुर नगर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान भारतीय चीनी उद्योग का सफर में विगत 100 वर्षों के प्रगतिशील इतिहास को एक डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से प्रदर्शित किया गया जिसमें इन वर्षों के दौरान इस उद्योग में हुये तकनीकी प्रगति को दर्शाते हुये दिखाया गया कि किस प्रकार आज, भारत का यह उद्योग विभिन्न चीनी उत्पादक राष्ट्रों में एक तकनीकी रूप से इस उद्योग के रूप में खड़ा हुआ है जो आज चीनी उत्पादन के मामले में विश्व में दूसरे पायदान पर है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निर्देशक नरेंद्र मोहन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि देश के आजादी के दौरान जहाँ भारत में मात्र 10 लाख मीट्रिक टन प्रति वर्ष की दर से चीनी का उत्पादन? होता था और इसके कारण देश में मांग की आपूर्ति हेतु आयात पर निर्भर रहना पड़ता था वहीं आज देश में चीनी का उत्पादन 300 लाख मीट्रिक टन प्रति वर्ष से भी अधिक होता है और अब विश्व के कई देशों को चीनी का निर्यात भी किया जाता है। उन्होंने कहा कि इस प्रगति में तकनीक ने निसंदेह खेतों से लेकर कारखाने तक की उत्पादकता बढ़ाने में सहयोग प्रदान किया है, तथापि हमें चैन की नींद लेने की आवश्यकता नहीं है अब हमें नयी तकनीकों के माध्यम से फार्म के यंत्रीकरण और डिजिटलीकरण के द्वारा गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता है। चीनी कारखानों को अब शून्य स्वच्छ जल खपत और शून्य डाउन टाइम के लक्ष्य को पाने का प्रयास करना चाहिए जिससे कारखाने की उत्पादन दक्षता के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण की भी ध्यान में रखा जाये।

प्रो. डी. स्वेन शर्करा अभियांत्रिकी आचार्य ने अपने सम्बोधन में विगत वर्षों के दौरान गन्ने के रस निकालने, स्टीम और ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में हुये तकनीकी विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि तकनीकी विकास का सुखद परिणाम यह रहा है कि अब चीनी कारखाने सरप्लस उत्पादित ऊर्जा को पावर ग्रिड को बेंच रहे हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आय की प्राप्ति हो रही है। डॉ. श्रीमती सीमा परोहा, आचार्या जैव रसायन ने पेट्रो-उत्पादों में इंथनोल के मिश्रण के क्षेत्र में हुये तकनीकी विकास के बारे विस्तृत जानकारी देते हुये इस उद्योग को इस क्षेत्र में विकसित नवीनतम तकनीकों को अपनाने पर बल देते हुये कहा कि इससे लक्षित अपशिष्ट प्रबंधन के साथ-साथ अपशिष्ट को संसाधन में परवर्तित करने में भी सहयोग प्राप्त होगा। श्री वीरेंद्र कुमार, वरिष्ठ इन्सट्रूमेंट अभियंता ने इस दौरान चीनी उद्योग में ऑटोमेशन (स्वतः प्रक्रिया संचालन) के ऊपर प्रस्तुति दी और बताया कि ऑटोमेटिक नियंत्रण के फलस्वरूप मानवीय भूलों से उत्पन्न अकुशलता में कमी आई है और बेहतर नियंत्रण और प्रक्रिया संचालन मानकों के उपयोग से उत्पादकता में चतुर्मुखी वृद्धि हुई है।

कैंसर पीड़ित अधिवक्ता

समय ब्यूज जिला संवाददाता पवन सिंह परिहार

हमीरपुर। गंभीर बीमारी से ग्रसित अधिवक्ता के उपचार करवाने को लेकर शासन द्वारा पर्याप्त धनराशि उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया है। एसोसि किए कार्य को सराहना की है।

बुधवार को डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष दिनेश शर्मा की अगुवाई अधिवक्ता शैलेंद्र सिंह चंदेल जो कि कैंसर रोग की गंभीर बीमारी से ग्रसित भूषण त्रिपाठी ने गंभीर बीमारी के उपचार हेतु रेड क्रॉस सोसाइटी के माध्यम की चेक एसीएमओ पी. के सिंह द्वारा प्रदान कराइ है उन्होंने शासन स्तर से धनराशि उपलब्ध कराए जाने के संबंध में प्रबल संस्तुति करने का आश्वास जिलाधिकारी को धन्यवाद ज्ञापित कर अधिवक्ताओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण

'चीनी उत्पादन में भारत दूसरे स्थान पर'

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि चीनी उत्पादन में आज भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है। आज भारत विश्व के कई देशों को चीनी निर्यात कर रहा है।

प्रो. नरेंद्र मोहन।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में 'राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस' मनाया गया

आजादी के अमृत महोत्सव पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस कार्यक्रम में एक डॉक्युमेन्ट्री के माध्यम से भारतीय चीनी उद्योग के वीते 100 वर्षों के सफर को दिखाया गया। इस मौके पर संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि देश की आजादी से पहले और उसके वाद भी भारत चीनी की मांग पूरी करने के लिये दूसरे देशों से होने वाले आयात पर निर्भर था, जवकि आज देश में 300 लाख मीट्रिक टन चीनी का उत्पादन होता है और भारत विश्व में दूसरे नंवर का चीनी उत्पादक देश है। इस प्रगति में तकनीक ने खेतों से लेकर कारखाने तक अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि अभी भी हमें नयी तकनीकों के माध्यम से फार्म के यंत्रीकरण और डिजिटलीकरण के द्वारा गन्ना उत्पादन वढ़ाने की जरूरत है। चीनी कारखानों को अव 'शून्य स्वच्छ जल खपत' और 'शून्य डाउन टाइम' के लक्ष्य पाने के प्रयास करने चाहियें। शर्करा आभियांत्रिकी के आचार्य प्रो. डी स्वेन ने गन्ने के रस को निकालने, स्टीम और ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में हुए तकनीकी विकास पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि तकनीकी विकास का सुखद परिणाम यह रहा कि अव चीनी कारखाने सरप्लस उत्पादित ऊर्जा को पॉवर ग्रिड को वेच रहे हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय हो रही है। जैव रसायन की आचार्य डॉ. सीमा परोहा ने पेट्रो उत्पादों में ईथनॉल के मिश्रण के क्षेत्र में हुए तकनीकी विकास के वारे में विस्तृत जानकारी दी। यहां वरिष्ठ इन्स्ट्रूमेंट अभियंता वीरेन्द्र कुमार और शर्करा आभियांत्रिकी के आचार्य संजय चौहान आदि थे।

Imperative need for greater application of technology: NSI head

PNS ■ KANPUR

Director of National Sugar Institute (NSI), Prof Narendra Mohan, while addressing the special session on National Technological Day said technology had although played a pivotal role in improving the farm and factory production but one need not sit back and relax. He said there was an imperative need for greater application of technology at farm, including farm mechanisation and digitalisation of sugarcane harvest. He said the sugar factories needed to have a vision for attaining goals of 'Zero Fresh Water Consumption ZFC)' and 'Zero Down Time (ZDT)' to improve efficiencies of factories and address environmental issues.

Director of National Sugar Institute Prof Narendra Mohan addressing a seminar on Technology Day on Thursday.

Prof D Swain, in his address highlighted the developments over the years in the area of juice extraction, steam and power generation.

He said the advent of technology had made it possible that now sugar factories were exporting surplus power to grid thus earning additional revenues.

A documentary showing 'Journey of the Indian Sugar Industry' during the last 100 years was also shown to showcase the technological changes which have occurred making it one of the most efficient sugar industry among the various sugar producing countries and second largest in terms of sugar production. He added that from a meagre sugar production of 10 lakh metric tonnes per annum and meeting its requirement through imports at the time of Independence, now the country was producing more than 300 lakh metric tonnes per annum and exporting sugar to many other countries.

Senior instrument engineer Virendra Kumar presented details of process automation carried out in the sugar industry with more such automatic controls, inefficiencies due to human negligence had been minimised and with better control of process parameter there was all around improvement in productivities. The programme was conducted by Assistant Professor of Sugar Engineering Sanjay Chauhan.